

11/23

पीठासीन अधिकारी महोदय, ... है।
अतः पत्रावली पूर्वानुसार दिनांक 26/24 को पेश हो।

26/24

पत्रावली पेश हुई। वकील उभयपक्ष उपस्थित। श्रीमान
पीठासीन अधिकारी महोदय, ... में ... है।
अतः पत्रावली पूर्वानुसार दिनांक 5/24 को पेश हो।

6/24

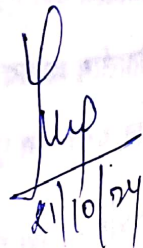
पत्रावली पेश हुई। वकील उभयपक्ष उपस्थित। श्रीमान
पीठासीन अधिकारी महोदय, ... में ... है।
अतः पत्रावली पूर्वानुसार दिनांक 22/24 को पेश हो।

22/24

पत्रावली पेश हुई। वकील उभयपक्ष उपस्थित। श्रीमान
पीठासीन अधिकारी महोदय, ... में ... है।
अतः पत्रावली पूर्वानुसार दिनांक 21/24 को पेश हो।

21/24

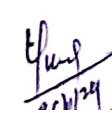
पत्रावली पेश हुई। वकील प्राची उपस्थित।
अप्राचीण अनुपस्थित। आवाज लगायी,
अनुपस्थित रहे। अतः अप्राचीण के विरुद्ध
एक पक्षीय कार्यवाही की जाती है।
वास्तव में दि. 26/11/24 को पेश हो।


21/10/24

26/11/24

पत्रावली पेश हुई। वकील प्राची उपस्थित।
एकतरफा सुनी गई। पत्रावली बाकी माइले
दिनांक 29/11/24 को पेश हो।




26/11/24

तारीख हुकम	हुकम या कार्यवाही या मय इनिशियल्स जज	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुकम की तालीम में जारी हुए
29/11/24	<p> पत्रावली पैदा हुई। बकीत प्रार्थी उपस्थित। ग्राम प्रार्थी की बहस प्रा० पत्र के परिपेक्ष्य में पत्रावली का अवलोकन किया गया। धारा- 212 RT Act 7. (a) 0-39 R1 22 CPC के प्रा० पत्र को adjudicate करने के लिए इसे निम्न 03 बिन्दुओं पर अवलोकन adjudicate करना आवश्यक है :- (अ) प्रकार प्रथम दृष्टया :- ग्राम प्रार्थी द्वारा बहस के दौरान बयान दिया कि ग्राम रायपुर तहसील रायपुर की वाडवास्त आराजी रज. नं० 1474, 1475, 1476, 1477 व 1478 कित्ता 5 कुल रकबा 10.3321 hae प्रार्थी व अप्रार्थी क्रम 1 से 5 की सयुक्त रवाते की पुश्तनी ग्रामी हैं जिसमें प्रार्थी का 1/4 हिस्सा दर्ज है। अप्रार्थी क्रम 2 से 4 रायपुर नहीं रहकर झालरापारज निवास करते हैं और ग्रामलाती पुश्तनी आराजी का बिना रवाता विधान मरायी बँचान करने पर आमदा ही रहे हैं अतः प्रकार प्रार्थी के पक्ष में है। ग्राम प्रार्थी की बहस के परिपेक्ष्य में ग्राम रायपुर की वाडवास्त आराजी के काल प्रमावकी संवत् 2033-76 के अनुसार रवाता स० 997 कित्ता 5 रकबा 10.3321 hae प्रार्थी व अप्रार्थी 1 से 5 के ग्रामलाती रवाते में दर्ज हैं जिसमें प्रार्थी का हिस्सा 1/4 दर्ज है। वाडवास्त भूमि के पैतृक संपत्ति होने का कोई भी साक्ष्य पत्रावली पर उपलब्ध नहीं है। कोई संपत्ति यदि चतुर्थ पुत्र जीवित अविभाजित रूप से विरासत में प्राप्त हुई है तो वह पैतृक संपत्ति होगी। यह सही है कि सहस्राती की आराजी में प्रत्येक सहस्रातेदार का प्रत्येक हिस्से पर समान हक व भागीदारी माना जाता है। प्रार्थी द्वारा अशापथ पत्र से </p>	

द्वारा कथन किया है कि वाजपेयी आकाशी का
 रवाता विभाजन नहीं हुआ है। अप्राचीण के
 वाजपेयी सूचना न्यायलय से अनुपस्थित रहने
 से प्रथम दूरपा बाहिर होता है कि अप्राचीण
 अपने समर्थन से कुछ पत्र/साक्ष्य पेश
 करना नहीं चाहते हैं। अतः प्रकरण प्रथम
 दूरपा प्राची के पक्ष में साबित है।
 (ब) सुविधा का संतुलन :- ग्रामीण प्राची

द्वारा कथन किया कि हमारा रवाता विभाजन
 मोटे पर भी नहीं हो सका है। प्राची
 व अप्राचीण, सूतक रामदयाल के पुत्र/पौत्र
 हैं। सूतक रामदयाल के चारों पुत्री - रमेश
 चंद, हुकुमचंद, सुरेशचंद व कैलाशचंद - 1/4-1/4
 भाग पर पारिष् विरासत रवाते दर्ज रिकार्ड
 हुए हैं लेकिन खेती कमी शामिल कर ली
 कर रहे हैं। लेकिन अप्राचीण विना रवाता
 विभाजन करायें, भाग/हिस्से का अलग कर
 को बेचान कर कल्या सौंपना चाहते हैं।
 जिससे प्राची का अधिक असुविधा होगी।

ग्रामीण प्राची के कथनों के समर्थन
 में स्वयं का शपथ पत्र पेश है, अन्य कोई
 दस्तावेज नहीं है। माननीय रामलक्ष्म मंडल द्वारा
 कई महत्वपूर्ण निर्णयों से अग्रिम निर्धारित किया
 है कि "ग्रामवासी आकाशी से प्रत्येक भाग पर
 प्रत्येक सहस्रवातेदार का एकसमान हुक व
 अधिकार होता है"। यदि सहस्रवातेदार लिखित
 या मौखिक शपथ पत्र पेश कर अपने-2
 हिस्से पर कल्याकाशत रहते हैं तो इनके
 हिस्से के बेचान पर लगान व्यापारित नहीं
 होगा लेकिन यदि ऐसा साबित नहीं है

<p>तारीख हुक्म</p>	<p>हुक्म या कार्यवाही या मय इनिशियल्स जज</p>	<p>नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुक्म की तालीम में जारी हुए</p>
------------------------	--	--

तो किसी अजनबी केता की वैचान कर
हिससे विशेष पर कवजा सीपना न्याय वहुमा
कवयोग। इतः केवल वैचान कर केहसे
विशेष पर अजनबी केता की कवजा सीपनी
के हरे तक सुविधा का सतुलन प्राची
के पक्ष में साबित हैं।

(ख) अपूरणीय क्षति :- प्रकरण प्रथम हनुप
एवं अजनबी केता की हिससे विशेष का
वैचान कर कवजा सीपनी के हरे तक
सुविधा का सतुलन की प्राची में पक्ष
में साबित हैं। शान्तारी कृषि न्याय में
बिना लिखित या मौखिक पारिवारिक वतवरे
के अजनबी केता की हिससे विशेष का
वैचान से प्राची की अपूरणीय क्षति
ही लकती हैं।

उपरोक्त विवेचन व विशेषण के
माधार पर प्राची का प्राठ पत्र प/स 212
RT Act n.w. 039 R182 cpc क्रान्तिक का
से लीकार किया जाता हैं। अप्राची क्रम
1 से 4 की तामेसलामुमवास इस आशय कि
अरखार्द निषेधात् से पाबंड किया जाता
है कि वे ग्राम रायपुर की वाडगस्त शान्तारी
आधी खाता स० 997 किता 5 रकबा 10.89 ac
का खाता विभाजन कराये बिना किसी अजनबी
केता की वैचान नहीं करे। कसल वाइत
करने या अन्य किसी अंतरण पर कोई रोक
नहीं रहेगी। पत्रावली बैलभुमार होकर नम्बर
से कम होकर मूलवास के साथ सतुलन है

उपलब्ध अधिकारी
पिपता जिला न्यायाधीश (राज०)

